बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ दिनांक -09 - 03 - 2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज सर्वनाम के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे ।

निजवाचक सर्वनाम' का रूप **'आप**' है। लेकिन, पुरुषवाचक के अन्य पुरुष वाले **'आप'** से इसका प्रयोग बिल्कुल अलग है। यह कर्ता का बोधक है, पर स्वयं कर्ता का काम नहीं करता।
पुरुषवाचक 'आप' बहुवचन में आदरके लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे-

- आप मेरे सिर-आँखों पर हैं
- आप क्या राय देते हैं?

- किंतु, निजवाचक 'आप' एक ही तरह दोनों वचनों में आता है और तीनों पुरुषों में इसका प्रयोग किया जा सकता है। निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में होता है –

- **विशेष ध्यान देवें ⇓⇓⇓**

- (क) निजवाचक **'आप'** का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण (निश्चय) के लिए होता है। जैसे-मैं आप वहीं से आया हूँ, मैं आप वही कार्य कर रहा हूँ।

- ख) निजवाचक **'आप'** का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है। जैसे-उन्होंने मुझे रहने को कहा और आप चलते बने, वह औरों को नहीं, अपने को सुधार रहा है।

- (ग) सर्वसाधारण के अर्थ में भी **'आप'** का प्रयोग होता है। जैसे-आप भला तो जग भला, अपने से बडो का आदर करना उचित है।

- (घ) अवधारण के अर्थ में कभी-कभी **'आप'** के साथ 'ही' जोडा जाता है। जैसे-मैं आप ही चला आता था, वह काम आप ही हो गया, मैं वह काम आप ही कर लूँगा।

निश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है,
उसे **'निश्चयवाचक सर्वनाम'** कहते हैं,

जैसे-

यह, वह।

उदाहरणार्थ – पास की वस्तु के लिए – **यह** कोई नया काम नहीं है, दूर की वस्तु के लिए-रोटी मत खाओ, क्योंकि **वह**जली है।